Study of attitudes of graduate level students towards life skills education on the basis of creative thinking

सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का अध्ययन

मेनका श्रीवास्तव*, डॉ. आरती शर्मा
स्कूल ऑफ एजुकेशन, सेम ग्लोबल यूनिवर्सिटी, रायसेन, मध्य प्रदेश

शोध सारांश

शिक्षा का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के माध्यम से ही हम बालकों को संस्कारवान बनाते है तथा वर्तमान समय में जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने लायक बनाने का कार्य भी शिक्षा ही करती है। जीवन कौशल शिक्षा सभी व्यक्तियों के लिए एक बुनियादी सीखने की आवश्यकता है नेतृत्व, जिम्मेदारी, संचार, बौद्धिक क्षमता, आत्मसम्मान, पारस्परिक कौशल आदि जैसे विभिन्न कौशल इसकी अधिकतम स्तर बढ़ाते हैं, अगर यह प्रभावी ढंग से अभ्यास कर रहा है हमें युवा कौशल कार्यक्रमों की आधारशिला के रूप में जीवन कौशल शिक्षा और हमारे औपचारिक शिक्षा प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा बनाने की आवश्यकता है। इस अध्ययन में सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि जीवन कौशल शिक्षा, स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में विभिन्न उभरती समस्याओं का समाधान है।

शब्द कुंजी– सृजनात्मक चिन्तन, अभिवृत्ति, जीवन कौशल शिक्षा

प्रस्तावना

जीवन कौशल शिक्षा में, बच्चों को गतिशील शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल किया जाता है। इस सक्रिय भागीदारी की सुविधा के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले तरीके में छोटे समूहों और जोड़े, बुद्धिशीलता, भूमिका निभाने, खेल और वाद–विवादों में काम करना शामिल है। एक जीवन कौशल सबक एक ऐसे शिक्षक के साथ शुरू हो सकता है जो छात्रों के साथ तलाश कर रहा है कि उनके विचार या ज्ञान किसी विशेष स्थिति के बारे में है जिसमें जीवन कौशल का इस्तेमाल किया जा सकता है। "जीवन कौशल को 'दैनिक जीवन कौशल' या 'सरवाइकल कौशल' के नाम से भी

पुकारते हैं जिसमें वे सभी तथ्य सम्मिलित है जिनका वह सामान्य तौर पर दिन–प्रतिदिन जीवन में प्रयोग करते हैं। कौशल व्यक्ति को घर अथवा समाज के कार्यों को भलीभांति करने हेतु सक्षम बनाते हैं। जीवन कौशल शिक्षा के लिए समाज की आवश्यकता है और हर शिक्षा प्रणाली को अपने पाठ्यक्रम के रूप में जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करना चाहिए क्योंकि यह सकारात्मक स्वास्थ्य व्यवहार, सकारात्मक पारस्परिक संबंधों और व्यक्तियों की अच्छी तरह से पैदा करने में सक्षम है।

जीवन कौशल अन्य कौशलों से भिन्न होते हैं। अन्य कौशल सामान्य जीवन जीने में तो सहायक हैं लेकिन इन कौशलों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग करने के लिए जीवन कौशलों की आवश्यकता होती है, परम्परागत ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण के व्यावहारिक उपयोग के लिए जिन चीजों की आवश्यकता है, वे सभी जीवन कौशल में निहित है। इससे किशोरों के व्यवहार में दायित्त्वों का बोध जागृत होगा और वे मानसिक और भावनात्मक रूप से स्वस्थ युवा बन सकेंगे। हमारे वातावरण में कई संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध होती हैं जिनको प्रयोग करने के लिए कुशलताओं की जरूरत है। इन जीवन कुशलताओं को बढ़ाने में मदद करने वाला कौशल जीवन कौशल' कहलाता है।

शोध की आवश्यकता

अब हमे समझने की जरुरत है की कौशल विकास या रोजगारपरक शिक्षा युवाओं को तैयार करने में शिक्षा प्रणाली का क्या महत्व है? रोजगारपरक शिक्षा देश में बेरोजगारी को दूर करने के लिए और उद्योग की जरूरत के मुताबिक कुशल श्रमिक तैयार करने के लिए बहुत ही जरूरी है। लेकिन रोजगारपरक शिक्षा की बुनियाद तभी बेहतर ढंग से तैयार होती है जब स्कूली शिक्षा के सभी स्तर में सुधार हो. चाहे वो प्राथमिक शिक्षा हो, माध्यमिक हो या फिर उच्च शिक्षा स्कूली शिक्षा के दौरान ही बच्चों के रुझान का पता चलता है। अक्सर कौशल विकास के कार्यक्रमों में असफलता का मुख्य कारण होता है कि गांव में जिस तरह के कौशल की जरूरत है, उस तरह के पाठ्यक्रमों को शामिल नहीं किया जाता है।

अब हमे समझने की जरुरत है की कौशल विकास या रोजगारपरक शिक्षा युवाओं को तैयार करने में शिक्षा प्रणाली का क्या महत्व है? रोजगारपरक शिक्षा देश में बेरोजगारी को दूर करने के लिए और उद्योग की जरूरत के मुताबिक कुशल श्रमिक तैयार करने के लिए बहुत ही जरूरी है। लेकिन रोजगारपरक शिक्षा की बुनियाद तभी बेहतर ढंग से तैयार होती है जब स्कूली शिक्षा के सभी स्तर में सुधार हो. चाहे वो प्राथमिक शिक्षा हो, माध्यमिक हो या फिर उच्च शिक्षा स्कूली शिक्षा के दौरान ही बच्चों के रुझान का पता चलता है। अक्सर कौशल विकास के कार्यक्रमों में असफलता का मुख्य कारण होता है कि गांव में जिस तरह के कौशल की जरूरत है, उस तरह के पाठ्यक्रमों को शामिल नहीं किया जाता है।

शोध के उद्देश्य

जीवन कौशल शिक्षा से व्यक्ति अपने जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है, आत्म विश्वास से जीवन का निर्वाह करता है। व्यक्ति का ऐसा व्यक्तित्व जिससे व्यक्ति जीवन के सभी संघर्षों व चुनौतियों

का बहादुरी से सामना कर अपने स्वप्नों का सफलता से पूर्ण जीवन सफल बना सकें। जीवन कौशल से युक्त व्यक्ति जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है, आत्मविश्वास से जीवन का निर्वाह करता है। वह अपनी सफलताओं से ऊर्जा प्राप्त कर स्फूर्तिवान बनता है तथा असफलताओं के कारण उत्साहित व निराश होने के स्थान पर इनसे प्रेरणा लेकर असफलता को भी सफलता की प्रथम सीढ़ी बना देता है।

प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

- स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियां शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति का पता लगाना।
- महाविद्यालयों में छात्र और छात्राओं के सृजनात्मक चिन्तन की क्षमता, उनकी शैक्षिक उपलब्धियां, जीवन के लिए तैयार करना।
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों पर लिंग व सृजनात्मक चिन्तन का प्रभाव का अध्ययन।
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल की अभिव्यक्ति पर आत्मज्ञान द्वारा निर्णय लेने की क्षमता की तुलना करना।
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आवासीय पृष्ठभूमि के प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध संगठन

जीवन कौशल को प्रमुख कौशलों का समूह कहा जाता है।

सृजनात्मक चिन्तन

सृजनात्मक चिन्तन निर्णय लेने और समस्याओं का समाधान करने में सहायक होता है। इस कौशल से विकल्पों की खोज की जा सकती है और उपलब्ध विकल्पों पर कार्य करने या नहीं करने के परिणामों का अनुमान लगाया जा सकता है। यह व्यक्ति को संवेदनशील बनाता है एवं उसमें नवीन विचारों की उत्पत्ति होती है जो इस प्रकार है :–

- व्यक्ति कल्पनाशील बनता है।
- व्यक्ति नवीन विकल्पों की तलाश की ओर अग्रसर होता है।
- सृजनात्मकता के लाभ को समझता है।

अध्ययन हेतु जनसंख्या

इकाइयों के समूचे समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट है, जनसंख्या कहते हैं। जनसंख्या समग्र का वह भाग है, जिस तक अनुसन्धानकर्ता की पहुँच हो सकती है। जिसमें से न्यादर्श का चुनाव होता है और जिसके प्रति न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों का समान्यकरण व उपयोग करना चाहते हैं। न्यादर्श समूचे इकाई समूह में से चुनी गई कुछ ऐसी इकाइयों का समूह होता है जो अपने समूह का

पर्याप्त प्रतिनिधित्व करे। प्रस्तावित शोध में न्यादर्श के रूप में इंदौर, उज्जैन, महू, धार जिले के स्नातक स्तर के 12 महाविद्यालय से कुल 450 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है जिसमें 225 छात्र तथा 225 छात्रायें सम्मिलित हैं । जिसका विवरण निम्न प्रकार हैं–

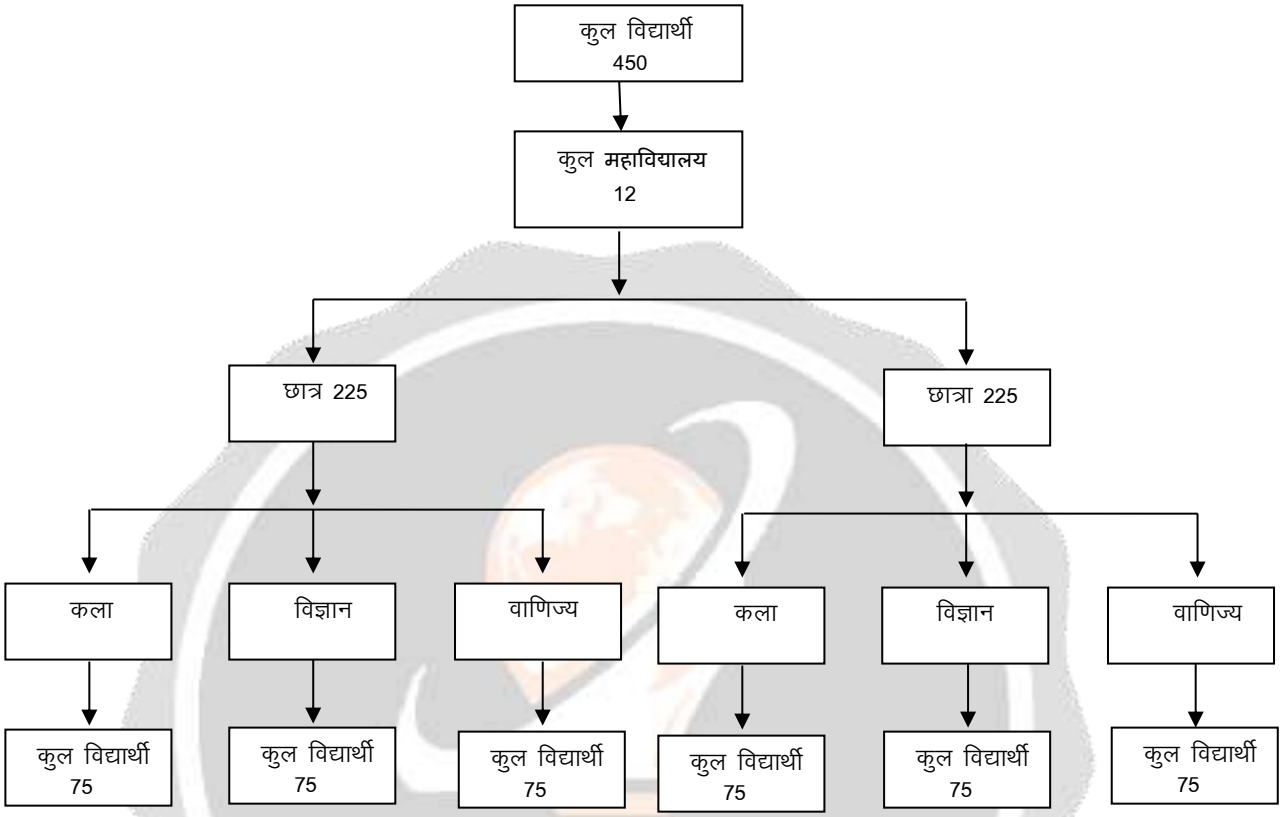

शोध परिकल्पना

शोध में समस्या के समाधान के संभावित रूप को परिकल्पना कहते है क्योंकि किसी भी शोध कार्य में परिकल्पनाओं का अत्यधिक महत्व होता है। यह एक ऐसी नींव के समान होती है, जिस पर अनुसंधान रूपी भवन तैयार होता है। अतः अनुसंधान का मार्ग परिकल्पना पर निर्भर होता है।

- स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के जीवन कौशल के प्रति अभिव्यक्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर लिंग व सृजनात्मक चिंतन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आवासीय पृष्ठभूमि एवं सृजनात्मक चिंतन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

- स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक रूचि व शैक्षिक उपलब्धियों में सैद्धांतिक प्राप्त अंकों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन के उपकरण

अनुसंधानकर्ता के लिए आवश्यक है कि उसे उपकरणों, विधियों एवं यन्त्रों का व्यापक ज्ञान हो उसे यह भी ज्ञात होना चाहिये कि इन उपकरणों से किस प्रकार के आंकड़े प्राप्त होंगे, उनकी क्या विशेषताएं एवं सीमायें हैं? किन अवधारणाओं पर इनका उपयोग आधारित है तथा उनकी विश्वसनीयता, वैधता एवं वस्तुनिष्ठता क्या है, इसके साथ ही उसमें उपकरणों के बनाने, प्रयोग करने तथा उनसे प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने का कौशल भी होना चाहिए। उपकरणों के चयन में हमें उपकरण द्वारा उद्देश्य की पूर्ति करना, उपकरण की विश्वसनीयता, उपकरण की वैधता, उपकरण की वस्तुनिष्ठता, विभेदीकरण, व्यापकता, प्रमाणीकरण आदि बातों का ध्यान रखना चाहिये। प्रस्तुत शोध हेतु जीवन कौशल के 3 अंगों को समाहित करते हुये 52 प्रश्नों का निर्माण किया गया है जिसमें 32 सकारात्मक पद तथा 20 नकारात्मक पद सम्मिलित है सभी पदो को 5 अकींय लिंकार्ट पैमाने पर मापा गया है सकारात्मक पदो हेतु 5 से 1 तक अंक प्रदान किये गये है। शोध अध्ययन के न्यादर्श प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार प्रश्नावली अभिकृति मापनी आदि उपकरण उपयुक्त होते है। इनमें शोध अध्ययन के लिए जीवन कौशल शिक्षा मापनी आधारित स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण चुना है। जो कि शोध अध्ययन के न्यादर्श को प्राप्त करने के लिए बहुत उपयोगी है।

प्रश्नावली को दो भागों में बांटा गया है

प्रथम भाग में विद्यार्थियों हेतु – इस प्रपत्र द्वारा विद्यार्थियों के संबंध में व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त की गई, यथा – नाम, पता, लिंग, महाविद्यालय का प्रकार, प्रकृति, महाविद्यालय का स्तर, महाविद्यालय का परिवेश, शिक्षण माध्यम, निवास स्थान का पता और संपर्क सूत्र इत्यादि पद हैं।

द्वितीय भाग में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों कों निम्नवत विभाजित किया गया है

- सृजनात्मक चिन्तन

उत्तरदाताओ का जनसंख्या विश्लेषण

प्रस्तुत शोध हेतु कुल 450 किशोर छात्र/छात्राओं का चयन किया गया है।

- आयु के आधार पर
- लिंग के आधार पर
- महाविद्यालय पृष्ठभूमि के आधार पर
- महाविद्यालय के प्रकार के आधार पर
- पाठयक्रम के प्रकार के आधार पर

सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर अभिवृत्तियों का विश्लेषण

इस प्रकार के चिन्तन का कौशल हमें किसी स्थिति विशेष से जुड़ी सूचनाओं, तथ्यों, अनुभवों आदि का विश्लेषण करने तथा वस्तुनिष्ट ढंग से विचार कर समायोजित निर्णय लेने में सहायता प्रदान करता है। मानव जीवन में अनेकों घटनाएं घटती है। कभी–कभी विषम सूचनाएं प्राप्त होती हैं। इस स्थिति में सूचना की प्रामाणिकता, विकल्पों को परखना, कारण जानना तथा साक्ष्यों पर अपना दृष्टिकोण निर्मित कर विश्लेषण करना चाहिए।

तालिका सं 1.1: सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्र.	सृजनात्मक चिन्तन	पूर्ण □ सहमत	प्रति0	आंशिक सहमत	प्रति0	सहमत	प्रति0	आंशिक असहमत	प्रति0	पूर्ण असहमत	प्रति0	कुल	प्रति0
1.	सृजनात्मक चिन्तन सम्बन्ध पद सख्या 1	108	24	20	4.44	75	16.67	39	8.67	208	46.22	450	100
2.	सृजनात्मक चिन्तन सम्बन्ध पद सख्या 2	151	33.56	36	8	122	27.11	59	13.11	82	18.22	450	100
3.	सृजनात्मक चिन्तन सम्बन्ध पद सख्या	56	12.44	190	42.22	64	14.22	40	8.89	100	22.22	450	100

	3												
4.	सृजनात्मक चिन्तन सम्बन्ध पद सख्या 4	118	26.22	77	17.11	91	20.22	37	8.22	128	28.30	450	100
5.	सृजनात्मक चिन्तन सम्बन्ध पद सख्या 5	126	28	28	6.22	16	3.56	76	16.89	204	45.33	450	100

सृजनात्मक चिन्तन का कुल स्कोर 11 से 32 के बीच रहा तथा मध्यमान 20.02 व मानक विचलन 8.36 रहा। सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों को दो भागो में विभाजित किया गया। मध्यमान 20.02 से अधिक उच्च आवृति का मान प्रदान किया गया तथा मध्यमान 20.02 से नीचे स्कोर निम्न आवृति का मान प्रदान किया गया।

तालिका सं 1.2: सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर अभिवृत्तियों का आवृति निर्धारण

क्र.सं.		आवृति	स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संख्या	प्रति0
1	सृजनात्मक चिन्तन	उच्च आवृति	268	59.56
		निम्न आवृति	182	40.44

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जीवन कौशल के विभिन्न घटकों के प्रति छात्रों की अलग–२ प्रतिक्रिया प्राप्त हुई है स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिन्तन के प्रति निम्न आवृति की प्रधानता इंगित करती है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सृजनात्मक चिन्तन की तरफ कम रूझान होता है।

तालिका सं 1.3: लिंग के आधार पर सृजनात्मक चिन्तन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का आवृति निर्धारण

क्र.सं.		स्नातक स्तर के विद्यार्थियों	संख्या	न्यूनतम स्कोर	अधिकतम स्कोर	मध्यमान	मानक विचलन
1	सृजनात्मक चिन्तन	छात्र	225	12	34	20.72	8.86
		छात्रायें	225	10	30	19.32	7.86
			450	11	32	20.02	8.36

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में छात्रों में छात्राओ की अपेक्षा उच्च स्तर की आवृति प्राप्त की है।

तालिका सं 1.4: निवास के आधार पर सृजनात्मक चिन्तन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का आवृति निर्धारण

क्र.सं.		निवास पृष्ठभूमि	संख्या	न्यूनतम स्कोर	अधिकतम स्कोर	मध्यमान	मानक विचलन
1	सृजनात्मक चिन्तन	शहरी	225	11	33	20.77	8.76
		ग्रामीण	225	11	31	19.27	7.96
			450	11	32	20.02	8.36

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर की आवृति प्राप्त की है।

तालिका सं 1.5: महाविद्यालय के प्रकार के आधार पर सृजनात्मक चिन्तन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का आवृति निर्धारण

क्र.सं.		महाविद्यालय का प्रकार	संख्या	न्यूनतम स्कोर	अधिकतम स्कोर	मध्यमान	मानक विचलन
1	सृजनात्मक चिन्तन	सरकारी	225	9	30	19.97	8.16
		गैर सरकारी	225	13	34	20.07	8.56
			450	11	32	20.02	8.36

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में सरकारी महाविद्यालय में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की गैर सरकारी महाविद्यालय में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न स्तर की आवृति पाई गयी है।

तालिका सं 1.6: पाठयक्रम के प्रकार के आधार पर सृजनात्मक चिन्तन में स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का आवृति निर्धारण

क.सं.		पाठयक्रम का प्रकार	संख्या	न्यूनतम स्कोर	अधिकतम स्कोर	मध्यमान	मानक विचलन
1	सृजनात्मक चिन्तन	विज्ञान	150	10	33	20.53	8.76
		वाणिज्य	150	12	32	19.26	8.06
		कला	150	11	31	20.27	8.26
			450	11	32	20.02	8.36

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में विज्ञान वर्ग में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वाणिज्य तथा कला वर्ग में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर की आवृति प्राप्त की है।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष

- उत्तरदाताओं में 50 प्रतिशत उत्तरदाता 17–19 वर्ष आयु वर्ग तथा 25–25 प्रतिशत उत्तरदाता 20–21 वर्ष व 22–23 वर्ष आयु वर्ग के थे।
- उत्तरदाताओ में 50 प्रति0 छात्रायें तथा में 50 प्रति0 छात्र सम्मिलित थे।
- उत्तरदाताओ में 50 प्रति0 छात्र/छात्रायें नगरीय परिवेश में स्थित महाविद्यालयों से तथा 50 प्रति0 छात्र/छात्रायें ग्रामीण परिवेश में स्थित महाविद्यालयों से थे।
- उत्तरदाताओ में 50 प्रति0 छात्र/छात्रायें सरकारी महाविद्यालयों से तथा 50 प्रति0 छात्र/छात्रायें गैर सरकारी महाविद्यालयो से थे।
- उत्तरदाताओ में विज्ञान, वाणिज्य तथा कला वर्ग सें 33.33 प्रति0 उत्तरदाताओ का समान रूप से चयन किया गया था।
- सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में छात्रों में छात्राओ की अपेक्षा उच्च स्तर की आवृति पाई गयी।
- सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर की आवृति पाई गयी।
- सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में सरकारी महाविद्यालय में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की गैर सरकारी महाविद्यालय में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा निम्न स्तर की आवृति पाई गयी।
- सृजनात्मक चिन्तन के आधार पर जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्तियों में विज्ञान वर्ग में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की वाणिज्य तथा कला वर्ग में पढनें वाले स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर की आवृति पाई गयी।

शोध परिणाम

मूल्य शिक्षा बहुत अच्छी तरह से परिभाषित है, और यहां तक कि विषय पर आधारित पाठ्यपुस्तकों है। अपने बच्चों को सामंजस्यपूर्ण जीवन के मूल सिद्धांतों में लंगर डालने की आवश्यकता को अधिक बल नहीं दिया जा सकता है। आज हम जो अनिश्चित और आक्रामक दुनिया जी रहे हैं, वह आदर्शों से अत्यधिक व्यावहारिकता के लिए दूर जाने का एक परिणाम है। इस अध्ययन में जीवन कौशल के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है क्योंकि जीवन कौशल हमारे दिन–प्रतिदिन जीवन का हिस्सा बन गए हैं। यह अनुसंधान डिजाइन के लिए एक आधार प्रदान करता है और अध्ययन के लिए प्रेरणा साबित हुआ। शिक्षकों ने अच्छा बुनियादी ढांचा, अध्यापन और तकनीकी एकीकरण के नए तरीकों की पहचान की, जो महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं के रूप में ड्राइविंग परिणाम में उन्हें समर्थन देते हैं। पूरे शिक्षक समुदाय इससे सहमत हैं कि शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने में नई शिक्षण पद्धति पेश करने का एक महत्वपूर्ण कारक होगा।

सन्दर्भ सूची

1. शिक्षा और समाज : सुभाश शर्मा, पृ0 38
2. अशिक्षा तथा उदीयमान भारतीय समाज : प्रकाश नारायण नाटाणी, पृ0 27
3. गौरी, श्रीवास्तव 1995, बालिकाओं की शिक्षा का महत्व और उनकी शिक्षा के प्रचार और प्रसार का अभियान, भारतीय आधुनिक शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, जनवरी, 1995 पृष्ठ संख्या–31
4. नौटियाल, कैलाश चन्द्र ;1995द्ध, स्वतंत्रा भारत में बढती साक्षरता, निरक्षरता व प्राथमिक शिक्षा से संबंधित कुछ तथ्य, भारतीय आधुनिक शिक्षा, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली, जनवरी, 1995 पृष्ठ संख्या–36
5. Gude and Hatt, Method in Social Research" McGraw-Hill, 1952.
6. P.V. Young, Scientific Social Surveys and Research Prentice Hall (1949).